22/07/2020

Ajeet kumar
Assistant professor
C.M.J College,
Donwarihat

PHILOSOPHY (Sub/Hon)

Ethics

perfectionism (आत्मपूर्णतावाद)

आत्मपूर्णतावाद अन्य सभी नैतिक सिद्धान्तों का खण्डन कर आत्मा की पूर्णता या आत्मसिद्धि को ही नैतिक मानदण्ड स्वीकार करता ~~[illegible]~~ है। इस मत के अनुसार जिस कार्य से आत्मा की पूर्णता हो अथवा आत्मसिद्धि हो वही कार्य नैतिक दृष्टि से उचित है। आत्मा की पूर्णता इन्द्रिय सुख की बुद्धिवाद आदि सभी अपूर्ण मत हैं। उदाहरणार्थ सुखवाद के अनुसार मानव स्वभावतः सुख करना चाहता है अतः वह उसी कार्य को उचित समझता है जिससे सुख की प्राप्ति हो परन्तु केवल सुख प्राप्त करना ही मानव जीवन का लक्ष्य नहीं हो सकता। सुख भावनाओं की संतुष्टि है परन्तु मनुष्य केवल भावनात्मक प्राणी ही नहीं वह इच्छाओं तथा वासनाओं को संतुष्ट करने के लिए ही सभी कार्य नहीं कर सकता। इस प्रकार सुखवाद एकांगी दृष्टिकोण है, अतः अपूर्ण है

इसके विपरीत बुद्धिवाद बौद्धिक नियमों
नियमों अथवा विवेक के आदेशों
के अनुसार जीवनयापन करने की
सलाह देता है। विवेक का आदेश
वासनाओं का पूर्णतः दमन है तथा
बुद्धि के नियमों के अनुसार जीवन-
यापन है परन्तु बुद्धि के नियम
या विवेक के आदेश से कठोर
है इनका पालन करना सरल नहीं।
मनुष्य विवेकशील अवश्य है, परन्तु
वह पाशविक प्रवृत्तियों का पूर्णतः
दमन नहीं कर सकता अतः विवेक
को ही नैतिकता का मानदण्ड कहना
कठोरतावाद है। इस प्रकार सुखवाद
और बुद्धिवाद दोनों अपूर्ण और
एकांगी हैं। एक ऐसे नैतिक सिद्धांत
की आवश्यकता है जिसमें बुद्धि
और भावना दोनों का समुचित
समन्वय हो यह समन्वयवादी नैतिक
सिद्धांत आत्मपूर्णतावाद है। आत्मपूर्णता
वाद का अर्थ आत्मसिद्धि या
व्यक्ति का सम्पूर्ण कल्याण है।